

दिहन् नस्मनुष्येदेविनारायणसंनुष्ट नैकनयमेभ्वरलेपरममो
अदिहन् ॥ ४ ॥ **॥ अदिहिराउवा ॥** मेघस्थासंपितकौशेयवाशः
श्रीवत्साककौस्तभोद्रुतिनागं पुण्येनपुण्डरीकायनाक्षविद्युवरे
सर्वलोकैकनाथं ॥ ५ ॥ मेघजलोकांलावराभयाकापीतवस्त्रयहिना
काकौस्तभमरिाकामालालायाकाकमलयत्रजस्तानेत्रभयाकात्रीनु
वनकानाथस्तानारायणकोनमस्कारमनुदिनप्रतिभक्तजनले ॥
॥ ५ ॥ **॥ श्रीमसेनउवाच ॥** जलौघमनासवरावराधरायानकोद्याविः

लविश्वभूतना ॥ समुद्रनायेगा वराह रूपिणा समेत्तयं भुभगं नृसिद्धं
 ॥ ६ ॥ गौरुज नारायेगा विष्णुले वराह को अवतार लिंकन हिडन्या भा
 देन्य को नाशगत्या पृथिवी कनधनाले उचालित्या या यत्ना परमे श्वर
 लेमक कनरक्षा दयागर्नु चाहिं ॥ भनि विनिगदा भया ॥ ६ ॥ जग
 न्मयाव ॥ अविन्यम बाक्रमनं तम वायं विभु प्रभु भावित विश्व भावन
 म ॥ त्रैलोक्य वित्तार विभाव भाविनां हरिं प्रपन्नोस्मि गतिं महात्मनां ॥
 ७ ॥ विष्णु को चित्रनाग गर्नु वडो गाहो ॥ यक्र न भया का कै है अनन

॥ ७ ॥

रूप कै है गोविन्द रूप कै है केशव रूप ननु क्षाया स न नाराह रूप रूप
 रिव ह्या त्रैलोक्य को विभाग न्या साधु जन भक्ति जन ले रता हरि को दुर
 रासा से वागर्नु मनुष्य हर ले ॥ ननु लडावा ॥ यदि गमन मय स्था का
 पाशानुबधात् यदि च कुल विहिने जायते पद्मी किने ॥ रुमिशत मधि
 त्या धाय ते वा नरात्मा समभवन्नु हृदि स्थे केशवे भक्ति रेका ॥ ८ ॥
 ॥ अवि पूर्व जन्म का पाप ले अने के न क भोग भया यनि न सथ देय
 मे श्वर मे राह दय मा वलु ह वस् पाप नाशग रिदिनु होला भनि भ

जनने भंछन ॥ सहदेव उवाच ॥ तस्य यज्ञवराहस्य विष्णु रतुल मे जन्मा
प्रणामयेत्पु कुर्वन्निनेषामपि नमो नमः ॥ ९ ॥ एति नेत्र विवराह
को नमस्कार गरि यज्ञग न्या वराह कन सो क्षदि न्या पर मे श्वर कन मेरो
नमस्कार ॥ स्व कर्म फल निर्दिष्टां यो यो निवृजाम्यहं ॥ तस्य तस्यो
हृषिकेश त्वयि भक्तिं दुज्जकते ॥ १० ॥ आफ्रा जन्म कर्म को फल
विचार गरि कन को ना जन्मा जन्म ऊं ॥ अथि विष्णु को भक्ति ग न्या को
या वासनारहं छर यदि त्वा जन्म मापनि विष्णु का वरण प्राप्त करे

छन ॥ साङ्गि उवाच ॥ कृत्स्न रत्ना कृत्स्न मनुस्मरन्ति रात्रौ बहू सपुण्य
हृत्थी नाये ॥ तेभिर्न देहा प्रविशन्ति कृत्स्न हविर्यथा संव्रतं न ऊना
शे ॥ ११ ॥ कसेने श्री कृष्ण को नाम वडा भक्ति ले स्मरण गये न
रान दीन सु नामा यनि उठ नामा यनि पर मे श्वर कृष्ण को नाम समीप
ध्यान जग गठन तत्कन मोक्षे दुनू वेर है न जज्ञो गरि अति मायि
उपलब्ध नज्ञो गरि पाप नि की जां छ विष्णु का भक्ति ले ॥ शेष उवाच ॥
किं न्य पुषि छि सु मृगे पुसरि मृपे पुरक्षे पिशाच मनु ज व पि यत्र न

त्र॥ ज्ञानस्य मे भवतु के शवत्तु सा दा त्वये व भक्तिर वरा व मिताशी
 व॥ १२ ॥ हे परमेश्वर कृष्ण मकन की न प तंग प भू धि ता वरा क्ष
 स म नृ प्य आदि जा हा जा हा ज न्म हो ला ता हा शी न श्व य ग रि न पा
 जिं का व र रा मा प्र ना म ग र्नु भ कृ मा चि त्त ग र्ज स क न्या ग रि प्र श न्न भ सा
 जाला ॥ **शुभ शो वास** ॥ ए को हि कृष्ण च कृष्ण प्रणा मी द त्वा स्व मे धि मी हि ॥ ५ ॥
 मा नि तु ल्य ॥ द त्वा श्व मे धि पु न रै ति ज न्म कृष्ण प्रणा मि न पु न भ वा च
 ॥ १३ ॥ त स्म स नु य ल श्री कृष्ण को प्रणा म ग यो त स्य नु य कृष्ण ॥ द

त्वा श्व मे ध य ज ग त्वा वा हि पां श उ व गी ता पा ठ ग रि गो वि न्द को भ ज न ग
 त्वा व डो पुं रा ण ह त स र्थं गो वि न्द भ ज न ह्ये डि अरु ति र्थ जा त्रा ग र्नु वा
 र्थ ह गो वि द भ ज न ग र्ज स क्त्वा फे रि ज न्म कुं दै न अ श्व मे ध य ज ग त्वा
 फे रि ज न्म कुं दै न ज्ञान्या मां क्षे ले गो वि न्द भ ज न ग र्नु ॥ **अभि स न्य वा**
॥ गो वि न्द गो वि न्द ह रे मु रा रे गो वि न्द गो वि न्द मु क्त न्द कृष्ण गो वि न्द
 गो वि न्द र था डू पा गो गो वि न्द गो वि न्द न मो न म स्त ॥ १४ ॥ हे गो वि न्द
 र थो ग पा रो हे मु क्त न्द कृष्ण हे च कृ धा रि त म्ना व र रा मा दि नो दि ने न म

कारगर्जदयाप्रसन्नभयाजावसभनिभंछन् ॥ **वधुवदवाच** ॥ श्रीराम
नारायणवाशुदेवगोविन्दवैकुण्ठमुकुन्दकृष्ण ॥ श्रीकेशवनन्दनृसिंह
विष्णोमात्राहिरासारभुजंगदृष्ट ॥ १५ ॥ हेरामनारायण हे वाशुदेव
हे मुकुन्द हे कृष्ण हे केशव हे अनन्त हे नृसिंह हे विष्णु योशंसारका
लपर्वकामुखमाययाकारुमिहामोवक्षागरभंछन् ॥ **सात्यकिरुवाच** ॥
॥ अप्रमेयं हरेर्विशोककृष्णदामोदराद्युतो ॥ गोविन्दानन्तसर्वसवाशुदे
वनमोक्षुते ॥ १६ ॥ परमेश्वरकाचरणाकारूपमहिमाज्ञानिसकृ

कसैलेयनिसकमन्तु हेअयुत टपात्रिकमन्तमस्कार ॥
उधवदवाच ॥ वाशुदेवपरित्यजेयान्यदेवमुपासये ॥ तृषीतोत्रह
विनिरेकपंखननिदुर्मति ॥ १७ ॥ गोमनुष्यलेश्रीकृष्णलाई को
डिअरुदेवताकोभजनउपासगछ तस्कनमूर्खभन्नु क्यानभन्याग
गात्रलपानगनेछाडि कुवाकोत्रलषान्यात्रलोहो ॥ **धौमरुवाच** ॥
अपासमीपेसयनासजस्य दिवाचरात्रौपथिगछताच ॥ यद्यस्ति किं
चिन्मुकृत्तं कृतं मया जनादं न तै न कृते न तु यं नु ॥ १८ ॥ यानिमा

पस्यापनि वस्यामा हि डदामा घरमापनि दिनदिनै तपात्रिकन
नमस्कारह एखो धर्म विचार गरि संतुष्ट भैकन प्रसन्न हुनु चाहिन्छ
॥ संज्ञा उवाच ॥ आता विषय सिधिला श्रीभीता घोरे पुयाद्यादिन
वर्तमानां ॥ संकल्प नारायण श्राद्धमात्र विमुक्त दुःखा सुखि नो भ
वन्ति ॥ १९ ॥ जोस नुष्ट दुःखि आनस्यमा विपति दुःख पयाका ॥ २० ॥
कन रोगि भयामा हरिको नाम लिखा पछि दुःख सो कको नाश हुन्छ
पत्रकन वठिया हुन्छ तसर्थ सदा सवदा हरिको नाम लिनु ॥

अक उवाच ॥ अहमस्मि नारायण दासदाशदासस्य दासस्य व
दासदास ॥ अन्यभ्यः श्रीशौनगात् नै नराणां तस्मादहं धन्यतरो ह म
स्मि ॥ २० ॥ हे नारायण तपात्रिको दास उक्तापि निदासमहुं न
पाया मलाई गति पाउला धन्य २ मेरो भाग्य वरणा को दर्शन पाया
भन्छु ॥ विदु उवाच ॥ वासुदेवस्य प्रभक्त्या शास्त्रात्तु न मानसा
॥ तेषां दासस्य दासो हं भवेजन्मनि जन्मनि ॥ २१ ॥ हे विलुभक्त
को आश्रमा रहं न्या श्रीकृष्ण तपाचरणा को दाश को दासमहुं जन्मः

जन्मांतरमायनिनपात्रिकोचरनकोदासमहुंभंछन् ॥ **भिष्मउवाच ॥**
 विपरितेषुकालेषुपरिक्षिरोषुवभुषु ॥ **ब्रूहि मां कृपया कृत्स्नशर**
णागतवत्सलं ॥ २२ ॥ हे कृत्स्नजलाद्रविषातिकात्मभाद्रवभुदे
 दधिदुत्याकासमयमा तपोनामशमरणागर्वाकनरक्षागर्नुवाः
 हिंछुर्हृदय ॥ **इराणाचार्य उवाच ॥** ये ये ह ताश्चक्रधरे न देत्यात्रैलो ॥ ८ ॥
 क्यनाथेन जनाईनेन ॥ तेनेगताविष्णुपरिप्रयाताक्रोधोपि देवस्य चः
 रेनतुल्यं ॥ २३ ॥ गोपिनामगत्याकोदेत्यपनिविष्णुलेमाश्वार उक्तेः

पनिसौगंवाशभयो रिसलेमायाकोपनिवरदानदि याजस्तोभयोर
 त्नाकृत्स्नकनमेरोवारवारनमस्कार ॥ **कृपाचार्य उवाच ॥** मज्जनमन
 फलमिदं मधुकैटभारेन न्यार्थनियमदनुग्रहययव ॥ २४ ॥
 हेमधुकैटभार परमेश्वर जाहो जाहो हासो जम होला जाहो जाहो नम्रा
 चरणाविन्दले कृपाराखून् होला भंछन् ॥ **मोदुत्तमभृत्यपरिवारक**
भृत्यभृत्यभृत्यस्यभृत्यमतिमांस्मरलोकनाथ ॥ २५ ॥ हे परमेश्व
 र ईश मित्रदातृ भाद्रभन्यापनिनम्रातरगादेवि अको छैन सवैका
 रणावरणाको छ भंछन् ॥ **अश्वत्थाम उवाच ॥** गोविन्द के राव जनाई

नवासुदेवविश्वेश्वरविश्वमधुसूदनविश्वरूप ॥ श्रीयमनाभिः ॥
नमप्रस्कराक्षे नारायणाद्युतनृसिंहविलो ॥ विसुगोविन्दकेव
ननाईज वा सुदेवमधुसूदन विश्वरूप यमनाभ नारायण
न नृसिंह एति नामरूपधारणागन्या सवैतिमिहो वारवारनमस्कार
हृपरमेश्वर ॥ ११ ॥ **कशांडवाच ॥** नान्यं वदामि न शृणोमि न विन ॥
यामि नानां स्मरामि न भजामि न चाश्रयामि ॥ भक्त्या त्वदीय वरणां व
जमादरेण श्री श्रीनिवासपुरुषोत्तममदेहि दास्य ॥ २६ ॥ हे परम

श्वर मेरोसे वागनुं ध्यान नमपूजागनुं स्मरणागनुं अर्कोकोहि छैन
सवैन पात्रिको वरणाद्य मेरो उद्धार गर ॥ २६ ॥ **कनराय उवाच ॥**
नमो नमस्कारावाप्तनाय नारायणाय मित्रविक्रमाय ॥ श्रीशा
रुचक्रासिगदाधराय नमोस्तुते तस्मै पुरुषोत्तमाय ॥ २७ ॥ **इत्या**
मनमस्कारगत्याकाप्रभावते वा वन्नरूपमै नारायणा त्रीविक्रम
गदाधर शारंगधर चक्रधारि एतौ पुरुषोत्तम नारायणा कनवा
रवारनमस्कार ॥ २७ ॥ **गाथा उवाच ॥** त्वमेव मानावपि ता

त्वमेव त्वमेव वधुश्च सखा त्वमेव ॥ त्वमेव विद्या इविता त्वमेव त्वमेव
 सर्वं मम देवदेवं ॥ २८ ॥ हे प्रभु देवदेवता कापनी देवता हो माताः
 पिता भाई वधु सगि विद्या इव्य सवै चरणारविन्द हो सकल उद्वा
 र गन्था जाव स मनी भंछन् ॥ **हुप पुवाव** ॥ अयु नानन्द गोविन्द माः
 धवानन्द केशव ॥ कृष्ण विमो हृषिकेश वासुदेवन मोक्षु ते ॥ २२ ॥ ॥ १० ॥
 हे अयु न गोविन्द माधव हे अनन्त केशव हे कृष्ण हृषिकेश हे
 वासुदेव एता पुरुष धारणा गन्था कन मेरो वार वार नमस्कार छ ॥

नमः कृष्णाय ॥ नमः कृष्णाय देवाय वसु रो न न्न मु तं ये ॥ योगेश्व
 राय योगाय न्याम हं सरांग त ॥ ३० ॥ हे कृष्ण कुम्भेश्वर पारव
 ल अनन्त मुर्ति जोगरूप ॥ योगात्मा तपा ज्ञे का चरणानाममस्का
 र ॥ **विकर्णोऽवाव** ॥ कृष्णाय वासुदेवाय देवकि नन्द नायव ॥ नन्द
 गोप कुमाराय नमो नमः ॥ ३१ ॥ हे कृष्ण देवकि का पुत्र वासुदेव
 नन्द गो कुल विराज गन्था यस्ताराम कृष्ण कन हे परमेश्वर नपात्रि
 कन वार वार नमस्कार छ ॥ **सोम दत्त उवाच** ॥ नमः परम कल्याण

गोविन्दाय ३

नमस्तैविश्वभावंनं॥ वाशुदेवाय शान्ताय यदुनां पतय नमः॥ ३२॥
 हे परमेश्वर परकल्याणदिन्या ईश्वरभावना शान्तस्वरूप एतापर
 मेश्वरकावरणमानमस्कारहू॥ **विराजत इवाव**॥ नमो ब्रह्मसादेवा
 यगो ब्रह्मसाहिनायव॥ जगद्गीताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः
 ॥ ३३ ॥ हे कृष्ण गोब्रह्मसाकादेवता सकल संसारलंकन उद्धार
 गन्ता एता गोविन्द कन नमस्कारहू॥ **बाला इवाव**॥ अतसि पुण्य
 संकासं पीनवास समुच्युतं॥ ये वस्मरन्ति गोविन्द न तेषां विद्युते

॥ १११ ॥

॥ ३४ ॥ हे गोविन्द नपात्रिको वस्त्रं अतसी पूष्य जरता असलपि
 नाम्बरपहिरिरहाका हे अच्युत नपात्रिकावर नमा सर्वे प्राणिनां
 नमस्कारगर्हन् भयदैन॥ **बलभद्र इवाव**॥ कृष्णकृष्णकृष्णलोत्वं म
 गतिर्भा गतिर्भव॥ संसारनं वमनानां प्रसीद प्रहृषोतम॥ ३५ ॥
 हे कृष्ण कृष्ण मय्यो संसारपापक समुद्रमादु विरहा कामनुष्य
 कन गतीदिन्या नपात्रिके हे॥ **कृष्णकृष्ण**॥ कृष्णकृष्णैति कृष्णैति
 यो मां स्मरन्ति नित्यम॥ गन्तव्यं नरकादुद्गराम्यहं॥ ३६ ॥

जसनु माल श्रीकृतनमने निजनि ॥ ३७ ॥ तस्मन् नृप्य कन्यानी मा
 दुव्याको कमलपत्रनिका ॥ ३८ ॥ पनाशगरिवैकुण्ठमाय
 यार्द्रिद्याछन् ॥ सत्यं दुविमिसु ॥ यमुद्रवाङ्ग येमां मुकुन्दन
 रसिंहजनार्दननेति ॥ जिवन्मृतपन्थमुदिनं स्मरगौरहोवपाषाणाकाश
 सत्यापददाम्पतिहं ॥ ३७ ॥ हे लोकशंसारकामनुष्यहो जसुलेमे ॥ ३८ ॥
 रीनाममुकुन्दनरसिंहजनार्दननभनिधानत्रयगला ॥ तस्कनसत्यर
 नेधैमंशुवासमिलच्छन् ॥ इश्वरदाव ॥ सकुन् नारायणोन्म कापुमा

रुमारहं ॥ शास्त्रनमान्याकनक्याधर्महोला ॥ ४१ ॥ इश्वरदाव
 ॥ नाथशोनिस्सहश्रेष्ठेषु येषु ब्रजामहं ॥ तेषु तेषु वलाभकिरमु
 तास्तु सदात्तयि ॥ ४२ ॥ हे प्रभु श्रीकृतनेकहजारजन्महोलात
 पनि तपात्रिंकोभक्तिगर्नसकन्यागरिजन्मदिनुहोला ॥ ४२ ॥
 याप्रीतिरविचेकानादिषयेषनपाधिनी ॥ त्वाप्तनुस्मरतानाथरुद
 यानापसर्गन् ॥ ४३ ॥ हे परमेश्वर श्रीभागवान् तपात्रिंकोवरह
 मा मैनेधिप्रभक्तगर्नसकन्यागरिदयागर्नवाहिहं ॥ ४३ ॥ नि

मित्रवाच ॥ किं तस्य दानैः किं तीर्थैः किं तपो भी किं म धरैः ॥ यौ नित्य ध्याः
 मने देवं नारायणमनस्थिरम् ॥ ४४ ॥ जस्मनुष्यलेदीनप्रतिजगत्पु
 रु नारायणको ध्यानगते सक न्या कन जगत्संसारकानिर्धन्वानगया
 कामदा श्री कृष्णको नामलिकन ध्यानगयाको वडोपुन्यं ॥ ४४ ॥
 प्रमदगीतवाच ॥ त्रिनोत्सवसदातेषां नित्य श्री नित्यमंगलं ॥ येषां ॥ १४
 हृदि स्थो भगवान्मंगलायतनो हरिः ॥ ४५ ॥ जस्मनुष्यले हरिको नाः
 प्रमंगलगावस नस्मनुष्यका हृदयमा कृष्णलेवास गच्छन् तत्का ह
 श्री

दयमासधै आनन्द गावला लक्ष्मि नृधिभै कन सदा मंगल होला ॥ ॥
 भारद्वाजवाच ॥ लाभतेषां कृततेषां जयतेषां पराजय ॥ तेषां मदव
 दसा मो हृदयस्यो जनाई न ॥ ४६ ॥ जस्मा हृदय फूल जस्मो निर्मल
 क नका हृदयना श्री कृष्णवसुधन् तस्मिन् जय होला ॥ ४६ ॥
 गोविन्दवाच ॥ गौरीदेवि दानं गृह गोपुकासि सकल प्रयोगे यदि क
 ला वासि शुभे ह्माम गुणैः हि रं रा दानं गोविन्द मो विन्द नानुत्पन्नान
 म् ॥ ४७ ॥ कोटि गोदान शम्भो कोटि गृहरामाकासि त्वा नगया जे

मकरमाधुप्रागमास्वानगमयन्तेरुपर्वतजत्रोसुवर्गदानगया
कोवाहिगोविन्दकोनामप्रातस्तमालिद्यानस्कोवडोपूज्यपात्रिह
॥ आनीहवाच ॥ गोविन्देतिमदास्नानं गोविन्देतिमदाजप ॥ गोविन्दे
तिमदाधानंमदागोविन्दकीर्तनम् ॥ ४८ ॥ स्नान. ध्यान गदापनि
गोविन्दजपन्. जपन्तप्यनिगोविन्दकोगर्तु. गोविन्दभजनगयाव
डोपूज्यमिलहन्. कृष्णलोकपुगहन् ॥ ४९ ॥ अक्षरंरुपरवृत्तगो
विन्देतित्रयक्षरं ॥ नस्मादुचिरंयेनेवह भूमायकल्पते ॥ ५० ॥

कमलेभन्यात्रीमक्षरपाईकनमया. वेसगारिजपानसक्या मोक्ष
होला. त्री. अक्षरकाप्रभावलेहुः स्वप्नाकोनावागारिसुखप्रदं. यिह
हृदयनिपितृलोकमापुगहन् ॥ ५१ ॥ वादयसातावाच ॥ अयु
नकल्पवृक्षोहो अननकामधेनवः ॥ विज्ञाननिश्चयगोविन्दो हरिर्ना
मविचितयत् ॥ ५० ॥ हेअयनकल्पवृक्षपनिनिमिहो. अनत्रय
निमिमिहो. कामधनुषीनि. विज्ञानमणिगोविन्द हरिः. ईसर्वेतिमिहो
तयोनामलियाकन अचानभयायनि सुवेन होला. ए. लापरमेश्व

रत्नाई नमस्कार छ भंछन ॥ ५० ॥ **हरि कृष्ण** ॥ जयतु जयतु देवो देवकी
 नन्द नोय जयतु जयतु कृष्णो कृष्णिवंश प्रसीद ॥ जयतु जयतु मेघस्था
 मल कामलांगो जयतु पृथ्वी भार नाशो मुकुन्द ॥ ५१ ॥ हे सर्वविस्व
 रूप देवकी को पुत्र नन्द देवकी को उच्चार गन्धर्व विष्णु सरिर मेघ वरा
 भद्रा का पृथ्वी को भार नाश गन्धर्व रत्नाग्र मेघर कनक मस्कार छ ॥ ५२ ॥
 ॥ ५१ ॥ **धिया लाया उवाच** ॥ श्रीमन्महर्षि विभजे गहद ध्वजा
 सापत्रयो प्रसमनायमवोषधाय कृष्णाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः

गाल्के शवकापहरये गुरवे नमस्ते ॥ ५२ ॥ हे श्रीशमनरसिंह कपिल
 स्म कसर्पको विषनारहन्ता केशव जगन्नाथ गुरु एताप ॥ ५३ ॥
 ननमस्कार छ ॥ ५२ ॥ **अथि होत्र उवाच** ॥ कृष्ण तदिष पदपंकजपि
 नरांते अथैव मे वि सनु मानस राजहंस ॥ एताप प्रयाण समस्त कफ
 वातपित्त कठ विरोधन विधौ स्मरणा कृतस्ति ॥ ५३ ॥ हे कृष्ण प्राणा
 नान्या वेला मा कफ वातपित्त ले छाटि समाग्रं देवोत्पादु देन न
 प्रोनाम कसो गरि लिनु ॥ वावा महर्षि दान्दू भार्दू जंमै को केहि

लार्देन नपात्रिको नाम कसो गरिलिन् नत्तावेला मा उद्धार गन्त नपा
 त्रिहो हे परमेसोर त्रिमिक नृपकार ह ॥ ५३ ॥ **विदुर उवाच ॥** हरिनामैव
 नामैव नामैव समजिवनं ॥ कलौ नास्तेव नास्त्यवगतिरन्यथा ॥ ५४ ॥
 हे हरि नागयता नपात्रिका वरणा देवि मेरो जर्को केहि है न नपा
 त्रिका वरणा मा पद्या को दु बार बार नमस्कार ह ॥ ५५ ॥ **वसिष्ठ उवाच ॥ ५७ ॥**
 कृते निमंगलं नाम यस्य वाचा प्रवर्त्तते ॥ भस्मि भवति नरका ॥ महा
 पातक कोटयं ॥ ५५ ॥ **जौ नमनुष्यले मंगल वनाया पनि कसको**

नामलिनामंगल वनायता ॥ तस्को कोटि पाप प्रयापनि भस्म होला
 ॥ ५५ ॥ **अरुध उवाच ॥** कृष्णाय वाशुदेवाय हरये परमानन्दे ॥ प्र
 णातके दानायाग गोविन्दाय नमो नमः ॥ ५६ ॥ **हे कृष्ण हे वाशुदेव**
हे हरि ॥ नमो नमो नमो ॥ हरि को मंगल गान्ता ॥ मनुष्य कन जसै वा
 ५७ ॥ **क्या को कटर फारि कन सुख देखाउं छु न तसै मनुष्य**
को कहै ॥ ५८ ॥ **कन्या उवाच ॥** कृष्णानुत्तरणा देव
 ५९ ॥ **कन्या उवाच ॥** मेदमा प्रोतिगिरि बंजु ह तो जबा ॥ ५९ ॥

नारायणान्तमव्यं ॥ ६१ ॥ दिनप्रतिनारायणकोनिर्मलनामनिनुदि
 नप्रतिनारायणकोचरणामानमस्कारगर्नु अविनाशिमंत्रनेनपगर्नु
 ॥ ६१ ॥ **शौनकाव्य** ॥ स्मृतसकलकल्याणभजनयत्रजायते
 पुरुषोत्तमजनिन्यंबजाभिगाररांहरि ॥ ६२ ॥ हरिकोनामलिन्या क
 नसमस्तकल्याणहोला आहु आत्मा पर आत्माचिह्नला सुपात्रहो ॥ ६२ ॥
 ला हरिकाचरणपुम्ला ॥ ६२ ॥ **गार्ग्यवाच** ॥ नारायणोनिमंत्रोस्तिवा
 गस्तिवसवन्निनी ॥ तथापिनरकेघोरेपतन्निघेनंधुनमरुव ॥ ६३ ॥

कोहमनुष्यवचनैपिछे नारायणजपूछे नममनुष्यकन नर्कवादा
 गोनूपदैन् नारायणकोनामनलिन्या नुखकन नर्कवादाहुंछ
 ॥ **बालभेदक** ॥ किनस्यवडंभिर्मंत्रैभिर्त्रि, यस्यजनार्दनं नमोना
 रायणायैनिमंत्रसवार्थसाधकः ॥ ६४ ॥ गौनमनुष्यविष्णुकोभक्ति
 नगरिअरुसर्वसाधनागर्ह अरुकोक्याप्रमोदनछ नमोनारायणो
 निविष्णुकोमंत्रज्ञान्यालेअरुवर्थविष्णुकोभक्तिहुलोछ ॥ ६४ ॥
 ॥ **वैसंपायनवाच** ॥ येनयोगेश्वररुत्ना सत्रपार्थोधनुधर नत्र

श्रीविजयोभुक्ताश्रुवानितिर्मम ॥ ६५ ॥ जाहाजोगेश्वर नाहां क
 लजाहाधनुं र नाहा अर्जुन ॥ जाहां कलवस्त्र नाहा लक्ष्मिवस्त्र नः
 ॥ **अगिरा उवाच** ॥ हरिहरनिपापानि दुष्टचिन्तरपि स्मृत ॥ अनिह
 यापिसत्यशेदहृत्य बहिषापक ॥ ६६ ॥ जस्मनुष्यले मनस्यिरगारि
 कनहरिको नामलिंछन् उक्तापाप अनेक जन्मको भयापनिसवैः ॥ ६७ ॥
 नाशकं ॥ ६८ ॥ **पराशर उवाच** ॥ सक्तुश्चरितं येन हरिरित्यक्षर
 दयं ॥ वंधपरिकरस्ये न मोक्षाया गमनं प्रति ॥ ६९ ॥ जस्मनुष्यले ह

६ आसनगरि कचित् गरि हरिको नाम जपला तस्को वै ऊं ठ वास हो
 ला ॥ ७० ॥ **पौलस्त्य उवाच** ॥ हेजि केर संसारं गे सर्वदा मधुर प्रिय ॥ को
 थुरवसति कल्याणलोको हि मधुर प्रिये ॥ ७१ ॥ हेजि भ्रासदा सर्वदा
 मधुर वचन बोलन कटक वचन नगर्तु नवसवै मनुष्य सुसिंहं ह
 न् ॥ **वासिष्ठा उवाच** ॥ सत्यसत्यं पुन सत्यं भुजमुनू धाम बोधने ॥ नवेदाश्च
 परं तास्त्रं न देव केशवाचारं ॥ ७२ ॥ विहरको वचन सत्यगारि मानुवे
 ददेवि अको शास्त्रं न केशवदेवि अको देवता न वेददेवि अलः

मंत्र छे न तस थं प ह नु प हा व नु मु नु र वि लु प श न्न डं छ न् ॥ ५२ ॥
 अ लु नान नू गो वि नू नामो वार रा भे ष न् ॥ न म्पं नि स क ला रा गा न्नः
 न स न्धं व दाम्य हं ॥ ७० ॥ हे अ न्यु न न प्रो ना म लि न्या क न् ध र्म क र्म दा
 न न प स्या अ रु दे व ता को से वा नि र्थ व र्त्त के हि ग र्जु प दै न् औ ष धि व न्
 नि मि हो ॥ ७० ॥ **मार्कण्डेय** ॥ स हा नि त्तं स ह हि द्रं ता वा ध ज ड नु ॥ ७१ ॥
 क ता य न्मू ड न्नै क्ष रां बा पि वा नु व न रि त्त मे न् ॥ ७१ ॥ हे कृ ष्ण नि मि
 ले ग दां स्व र्ग मो क्ष ग रा उ छौ ॥ ज्ञा न् का गु रू हो ज्ञा न्ना ज्ञ न ले षो ड व णी